2020

शिवदत्त आर्य

International Research Journal of Management Sociology & Humanities

Vol 11 Issue 1

ISSN 2348 – 9359

IRJMSH

WWW.IRJMSH.COM

शिवदत्त आर्य:

International Research Journal of Management Sociology & Humanities

ISSN 2348 – 9359 (Print)

A REFEREED JOURNAL OF

SPHERT

Explore Innovate Educate

Shri Param Hans Education & Research Foundation Trust

www.IRJMSH.com
www.SPHERT.org

Efficacy of Regional Rural Banks of Uttar Pradesh towards Financial inclusion 161

Ashutosh Kumar 161

Zero Budget Natural Farming: An Indigenous Approach in Agricultural Land Use 172

Saumya Yadav[1] and Sumit Yadav[2] 172

राहुल सांकृत्यायन की दृष्टि में नालन्दा.. 181

Dr. Shashikant 181

डॉ. शषिकान्त... 181

A Study of Consumer Behavior Towards Use of Cosmetic Products of Selected Companies, With Special Reference to Bhopal City. 185

Dr. Milind Limaye 185

PSYCHOLOGICAL IMPACT OF ENVIRONMENTAL POLLUTION ON HUMAN BEHAVIOUR 194

Dr. Deepti Gupta 194

STUDY OF SMALL TOWNS IN THE SEVENTEENTH CENTURY SUBA OF BIHAR: SOME CONSIDERATIONS 205

MAHESH KUMAR SINGH 205

पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं का योगदान.. 217

Dr. Shiv Datta Arya 217

"रश्मिरथी" में दलित चेतना 226

UMA SHANKER 226

पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं का योगदान

Dr. Shiv Datta Arya
डॉ.शिवदत्त आर्य
सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय,
श्री ला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठ, नई दिल्ली

पर्यावरण को भारतीय परम्परा में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। पर्यावरण हमारी पृथ्वी पर जीवन का आधार है जो न केवल मानव अपितु सभी चेतन-अचेतन प्राणियों एवं वनस्पतियों के उद्भव, विकास तथा अस्तित्व का आधार है। सभ्यता के विकास से वर्तमान समय तक मानव ने जो भी प्रगति की है, उसमें पर्यावरण का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस संसार में जितनी भी सभ्यताएँ और संस्कृतियां विकसित हुई है, वे मानव-पर्यावरण के सामंजस्य का परिणाम है। यही कारण है कि अनेक प्राचीन सभ्यताएँ प्रतिकूल पर्यावरण के कारण कालकलवित हो गई, अनेकों प्राणिजगत् और वनस्पति जगत् का विनाश हो गया। वस्तुतः पर्यावरण ही वह तत्त्व है जिससे मानव सत्ता सुचारु रूप से चल रही है।

पर्यावरणीय शक्ति और मातृ शक्ति मानव जीवन में पूर्णता लाने वाली शक्तियाँ हैं जो अनेक सम्भावनाओं से परिपूर्ण हैं। पर्यावरण एवं मानव दोनों परस्पर आश्रित हैं एक में चैतन्य है और दूसरा चेतन व चिन्तनशील है, मानव की यह चिन्तनशीलता उसे पर्यावरण के संवर्द्धन, संरक्षण एवं उसके कल्याणकारी उपयोग का सामर्थ्य प्रदान करती है। भारतीय सांस्कृतिक संदर्भों में पर्यावरणीय तत्त्व महिलाओं के माध्यम से सदैव महत्त्व पाते रहे हैं, चाहे वह पक्ष धार्मिक,आर्थिक,औषधीय,कलात्मक अथवा दार्शनिक क्यों न रहा हो। वर्तमान पर्यावरणीय समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए इनके निदान हेतु महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। अतः इस शोध पत्र में पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने वाली विभिन्न महिलाओं की भूमिका का वर्णन किया गया है।

पर्यावरण से तात्पर्य वह वातावरण है जिससे यह जगत् घिरा हुआ है। पर्यावरण शब्द 'परि' और 'आवरण' इन दो पदों से मिलकर बना है, जिसका निर्वचन है:- 'परितः आवृणोतीति पर्यावरणम्' अर्थात् जो चारों ओर से आवृत्त किए हुए है, वह

RNI/MPHIN/2013/61414

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC Care Listed

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

दशम वर्ष, द्वितीय अंक

मई - जून 2021

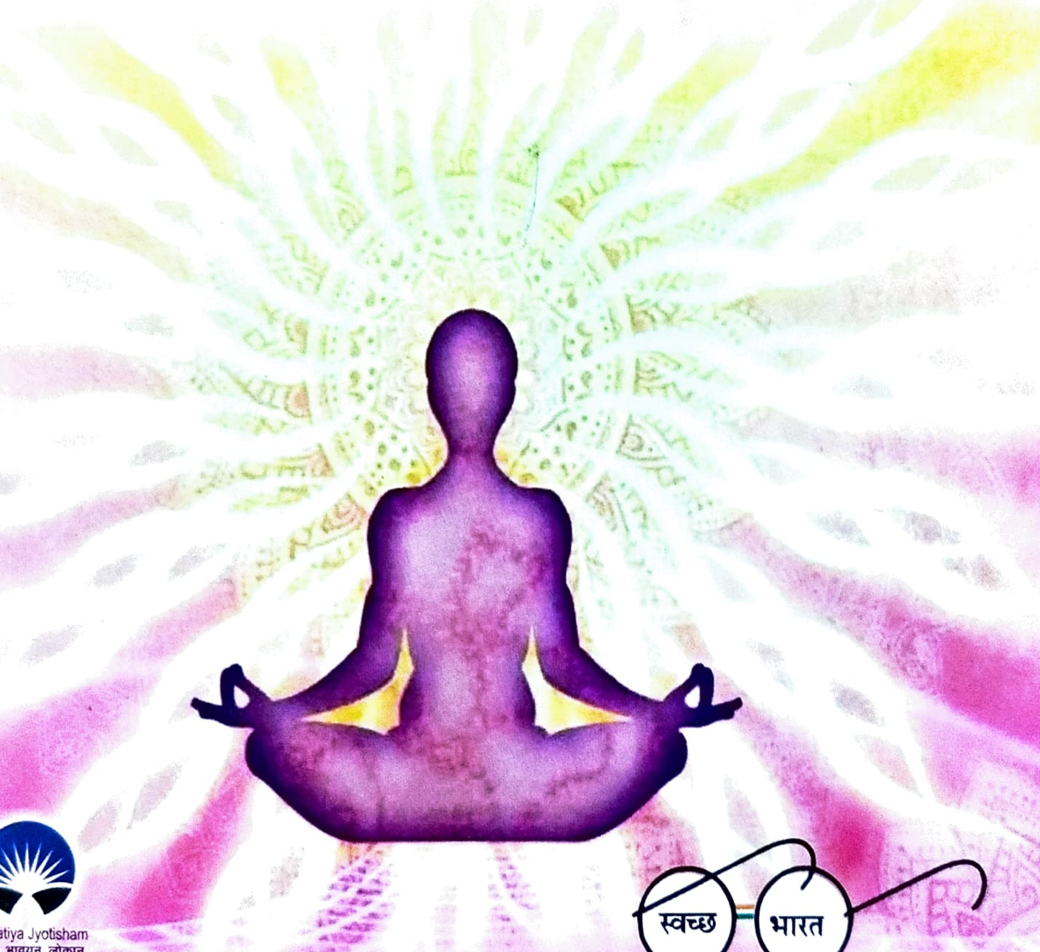

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भावयन् लोकान्
भारतीय ज्योतिषम्

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

₹ 30

दो गज की दूरी - मास्क है जरूरी

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414
UGC Care Listed

Bi - Monthly
Peer Reviewed
Refereed Journal

Bharatiya Jyotisham
पर्यैति भावयन् लोकान्

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका-संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक

प्रो. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्

कार्यकारी सम्पादक

अविनाश उपाध्याय

सम्पादक

रोहित पचौरी

डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल

ज्ञान सहयोग

पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रष्ट चैन्नै

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by
Smt P V N B Srilakshmi
on behalf of
Bharatiya jyotisham
L-108, Sant Asharam Nagar Phase - 3, Laharpur, Bhopal - 462043
Editor - ROHIT PACHORI*

ISSN 2278 - 0327

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	ज्योतिषशास्त्र में ग्रहणफल	डॉ. ब्रह्मानन्द मिश्रा	05
2.	भारतीय वास्तुशास्त्र और बहुमंजिले भवन	डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल	10
3.	श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण की दिव्य विभूतियों की समीक्षा	डॉ. अक्षय कुमार मिश्र	17
4.	अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अन्तर्गत मानवीय संवेदनाओं का विश्लेषण	डॉ. उष्मा यादव	23
5.	आदिकाव्य रामायण में वर्णित सामाजिक उपदेश	डॉ. दीप लता	29
6.	आस्तिकदर्शनों की एकरूपता	डॉ. विवेक शर्मा	33
7.	कालिदास की शैक्षिकदृष्टि	डॉ. अनिल कुमार	36
8.	रामचरितमानस और तुलसीदास की दार्शनिक स्थापनाएँ	डॉ. राजेश कुमार	40
9.	महाभारतकालीन मिथक का आधुनिक-प्रयोग : 'अंधायुग'	डॉ. अनिल शर्मा	43
10.	भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य में सांस्कृतिक संदर्भ	डॉ. सरिता	48
11.	एक थे आग़ा हश्र कश्मीरी	डॉ. आशा, डॉ. अनिल शर्मा	51
12.	शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में योग शिक्षा	डॉ. मनोज प्रसाद नौटियाल डॉ. दीवान सिंह राणा	55
13.	भारत निर्माण तथा शिक्षा का माध्यम : हिंदी भाषा का महत्व और प्रगतिशील भारत में उसका योगदान	डॉ. प्रियंका सिंह निरंजन डॉ. जिप्सी मल्होत्रा	60
14.	गाँधी जी का सर्वोदयदर्शन एवं वर्तमान चुनौतियां	डॉ. किरन बाला	64
15.	महाकवि कालिदास का पर्यावरणीय चिन्तन	डॉ. शिवदत्त आर्य	67
16.	शिक्षा एवं वेद	डॉ. सुमन कुमारी	72
17.	हिन्दी उपन्यास लेखन और महानगरीय बोध	डॉ. सुरेश कुमार बैरागी	75
18.	यशोधरा में नारीवादी दृष्टिकोण	डॉ. कुसुम नेहरा	81
19.	भारतीय साहित्य में आदिवासी विमर्श	डॉ. रश्मि शर्मा	84
20.	संज्ञानात्मक मनोविज्ञान और अधिगम	डॉ.अनूप कुमार पाण्डेय	88
21.	पूर्व माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षा अधिकार अधिनियम (2009) के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. आलोक शर्मा डॉ. आशीष कुमार बाजपेयी	93
22.	भवभूति प्रणीत नाटकों में 'वर्ण वर्ग' संबद्ध कविसमयानुशीलन	डॉ. वर्षा खण्डेलवाल	99
23.	श्रुति स्मृतियों में नारी का स्थान	डॉ. इतिश्री महापात्र	104

ISSN 2278-0327

महाकवि कालिदास का पर्यावरणीय चिन्तन

डॉ. शिवदत्त आर्य
सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय,
श्री ला०ब०शा०रा०सं०विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Abstract -

मानव एवं पर्यावरण का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति मानव को प्रकृति से ही होती है। संतुलित पर्यावरण ही पृथ्वी पर जीवन प्रक्रिया को उचित प्रकार से चलाने में सहायक होता है। जिन पञ्चभौतिक तत्त्वों से मिलकर यह मानव शरीर निर्मित है, उनमें से एक के अभाव में भी जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। पञ्चभूतों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए संस्कृत साहित्य में इनकी स्तुति की गयी है तथा उन्हें देवता मानकर धार्मिक भावना से जोड़ा गया है ताकि वे लोक आस्था का विषय बने रहें। परन्तु वर्तमान में आर्थिक विकास को ही सर्वोपरि रखने के कारण पर्यावरणीय मूल्यों की हानि हुई है। आर्थिक विकास को प्रमुखता देने के कारण अनेक प्रकार के पर्यावरणीय प्रदूषण (वायु, जल, ध्वनि, भूमिप्रदूषण इत्यादि) उत्पन्न हो गये जिससे मानव का स्वास्थ्य भी अत्यन्त प्रभावित हुआ है। मानव अनेक ऐसे असाध्य रोगों से ग्रसित हो गया जिसका इलाज भी संभव नहीं है। अतः हम सभी को यदि स्वस्थ एवं निरोग रहना है तो पर्यावरण प्रदूषण को कम करने में व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से सकारात्मक प्रयास करने होंगे। इस विकट परिस्थिति में हमें अपनी प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में पर्यावरणीय दृष्टिकोण का अनुसरण करना चाहिए। वैदिक एवं लौकिक साहित्य के अन्तर्गत पर्यावरण संरक्षण के महत्त्व का प्रतिपादन किया गया है। पर्यावरण संरक्षण हेतु मानवों में पर्यावरण सुहृद अभिवृत्ति (Eco-friendly) का विकास एवं पर्यावरण के प्रति सर्वदा संवेदनशील होना अनिवार्य तत्त्व माना गया है। प्रस्तुत पत्र में उपर्युक्त चिंतन को ध्यान में रखकर महाकवि कालिदास रचित ग्रन्थों में पर्यावरणीय चिंतन का वर्णन किया गया है।

Keywords -

पर्यावरण, संवेदनशील, पर्यावरण सुहृद् अभिवृत्ति, पञ्चभूत, पर्यावरणीय दृष्टिकोण, पर्यावरणीय मूल्य, पर्यावरण संरक्षण।

भूमिका -

पर्यावरण का तात्पर्य है *'परितः आवृणोतीति'* अर्थात् जो हमें चारों ओर से घेरे हुए हैं अथवा जिसके द्वारा यह चराचर जड़-चेतन भौतिक जगत् घिरा रहता है, वही पर्यावरण है। पर्यावरण शब्द के अन्तर्गत वे सम्पूर्ण परिस्थितियाँ, दशाएं और शक्तियाँ आती हैं। जो किसी भी जीव या जीववर्ग को घेरे रहती हैं तथा प्रभावित करती हैं। वस्तुतः हमारे चारों ओर जो भी वस्तुएँ, परिस्थितियाँ एवं शक्तियाँ विद्यमान हैं वे मानव के क्रियाकलापों को प्रभावित करती हैं और उसके लिए एक क्षेत्र सुनिश्चित करती हैं। इस विशाल दायरे को हम पर्यावरण कहते हैं। यह अनेकानेक छोटे-छोटे तत्त्वों से लेकर विशालातिविशाल तत्त्वों का जटिल मिश्रण है। शब्दकोशीय दृष्टि से पर्यावरण का अर्थ है-आस-पास या पास-पड़ोस-मानव, जन्तुओं और वनस्पतियों के जन्म, वृद्धि, विस्तार को प्रभावित करने वाली बाह्य दशाएं, कार्यप्रणाली तथा जीवन-यापन की दशाएँ। पर्यावरण स्वयं में एक बृहत् संकल्पना है क्योंकि उसका सम्बन्ध मानव जीवन और उससे सम्बन्धित विभिन्न वातावरण से है, तथापि उसके क्षेत्र अथवा आयाम की चर्चा विद्वानों ने मूलतः पाँच आयामों में की है- भौतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सौन्दर्यात्मक, सांस्कृतिक। पाश्चात्य विद्वान् लैण्डिस ने पर्यावरण को प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण के रूप में विभाजित किया है। विविध विद्वानों के वर्गीकरण के आधार पर जो आयाम देखने को मिलते हैं वे हैं- भौतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सौन्दर्यात्मक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनैतिक इत्यादि।

महाकवि कालिदास का पर्यावरणीय चिन्तन

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के विश्वविख्यात कवि एवं लेखक माने जाते हैं, जिन्होंने अपनी कृतियों में प्रकृति प्रेम को सर्वत्र संशलिष्ट किया है। महाकवि कालिदास ने अपने ग्रन्थों के माध्यम से मानव जाति को प्रकृति के सौन्दर्यात्मक स्वरूप का

ISSN 2454-1230

षोडशोऽङ्कः, XVI^th Issue

जुलाई – दिसम्बर, 2022

July – December, 2022

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)

Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवास वरखेडी

संरक्षकः

प्रो. राधागोविन्द त्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

प्रबन्धसम्पादकौ

प्रो. अंजूसेठः

श्री अरूणकुमारमंगलः (अधिवक्ता)

षोड़शोऽङ्कः जुलाई- दिसम्बर, 2022 ISSN No: 2454-1230

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA- PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवास वरखेडी

कुलपतिः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

संरक्षकः

प्रो.राधागोविन्दत्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

परीक्षानियन्त्रकः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

सम्पादकाः

डॉ. सुनीलकुमारशर्मा

सहायकाचार्यः, शिक्षासंकायः, श्री लालबहादुरशास्त्रिराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

डॉ. नितिनकुमारजैनः

सहायकाचार्यः, शिक्षासंकायः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

डॉ. आरती शर्मा

सहायकाचार्यः, शिक्षासंकायः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

प्रबन्धसम्पादकौ

प्रो. अञ्जूसेठः

सत्यवतीमहाविद्यालयः (दिनम्) दिल्लीविश्वविद्यालयस्य अधीनस्थः, नवदेहली

श्री अरुणकुमार मंगलः (अधिवक्ता)

प्रकाशकः

संस्कृतसंस्कृतिविकाससंस्थानम्

बाडी, धौलपुरम्, राजस्थानम् – 328021

प्रो. विमलेश शर्मा
16. **भारत भारती संवेदना और शिल्प** 92
डॉ. रमा आर्य
17. **हठयोग परंपरा मे शिव संहिता का विवेचनात्मक अध्ययन** 99
डॉ. रमेश कुमार
18. **वैदिक कालीन ब्राह्मण-साहित्य का इतिहास** 113
डॉ. सुजाता शाण्डिल्य
19. **अग्नि पुराण में प्रतिपादित भारतीय संस्कृति** 120
श्रीमती डिम्पल जैसवाल
20. **विजेंद्र प्रताप सिंह की कहानियों में तृतीय लिंगी विमर्श** 125
डॉ. रवि कुमार गोंड़
21. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में पर्यावरण शिक्षा** 130
डॉ. शिवदत्त आर्य
22. **वैकल्पिक शिक्षा: प्रकृति, व्यूह रचनाएँ, संभावनाएं और विकास का परिप्रेक्ष्य** 136
डॉ. अजय कुमार
23. **वेदों में समाहित भारतीय संस्कृति** 146
प्रीति रानी
24. **वैदिक वाङ्मय में निहित प्रजातांत्रिक सिद्धान्त** 157
सुश्री श्रद्धा तिवारी
25. **संस्कृत-वाङ्मय में मनुष्यता** 162
डॉ. रविकान्त तिवारी
26. **जिद्दू कृष्णमूर्ति - शिक्षा आडम्बर विहीन है** 166
कुमार रजनीश पाण्डेय
27. **भारतीय ज्ञान परम्परा (भारतीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में)** 170
डॉ. प्रज्ञा
28. **भारतीय वाङ्मय में योग** 174
निलिषा जैन
29. Literary Merits of Gītagovinda of the poet Jayadeva 182
Dr. Nilachal Mishra
30. CONTRIBUTION OF SANKARDEVA TO VAISNAVISM, PHILOSOPHY, EDUCATION AND SPIRITUALITY 192
Gyanendra Goutam

शिक्षाप्रियदर्शिनी
(अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता
बहुभाषीयशोधपत्रिका)
षोडशोऽङ्कः, जुलाई-दिसम्बर, 2022
ISSN : 2454-1230

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में पर्यावरण शिक्षा

डॉ. शिवदत्त आर्य
सहायक आचार्य, शिक्षापीठ,
श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Abstract

भारतीय संस्कृति मूलतः प्रकृति पूजक रही है। हमारे वेदों, उपनिषदों, पुराणों एवं लगभग समस्त प्राचीन ग्रन्थों में वृक्षों की वन्दना की गयी है। फूलों और फलों का ऋषि मुनि उपासना के लिए उपयोग करते थे। जीव जन्तुओं को विभिन्न देवी देवताओं का वाहक बताकर उन्हें भी पूजनीय बना दिया गया। पुराणों के अनुसार नदियों एवं पर्वतों को भी पूज्य एवं आदरणीय बताया गया है। प्रत्यक्ष रूप से उन्हें तीर्थ की संज्ञा देकर उन्हें भगवान्, संत, भक्त, ऋषि-मुनि, महात्माओं की तपस्थलियों और साधना का क्षेत्र बना दिया वहीं दूसरी ओर अप्रत्यक्ष रूप से उनके प्रदूषण की संभावनाओं पर नियंत्रण कर उनके संरक्षण के लिए एक सरल एवं सर्वव्यापक दिशा प्रदान की। वर्तमान समय में सांस्कृतिक प्रदूषण के कारण देवी-देवताओं के प्रति श्रद्धा भाव में कमी आयी है, परिणामस्वरूप मानव ने अपने ही हाथों पर्यावरण को अत्यन्त प्रदूषित कर दिया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में यह नीति तैयार की गयी है। इसके अन्तर्गत स्वस्थ पर्यावरण के महत्व को द्योतित किया गया है तथा संरक्षण हेतु भारतीय परम्परा में निहित पर्यावरणीय सुरक्षा उपायों के उपयोग पर बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी विविध समस्यायें तथा उनके सम्भावित समाधान क्या हो सकते हैं? इसी विषय पर इस शोधपत्र में चर्चा की गयी है।

Keywords: भारतीय ज्ञान, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, पर्यावरणीय सुरक्षा, भारतीय परम्परा, सांस्कृतिक प्रदूषण।

भूमिका

मानव एवं पर्यावरण का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति मानव को प्रकृति से ही प्राप्त होती है। संतुलित पर्यावरण ही पृथ्वी पर जीवन प्रक्रिया को उचित प्रकार से चलाने में सहायक होता है। जिन पञ्चभौतिक तत्त्वों से मिलकर यह मानव शरीर निर्मित है, उनमें से एक के अभाव में भी जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। पञ्चभूतों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए संस्कृत साहित्य में इनकी स्तुति की गयी है तथा उन्हें देवता मानकर धार्मिक भावना से जोड़ा गया है ताकि वे लोक आस्था का विषय बने रहें। भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में प्रकृति की उपासना और सौन्दर्य साधना के जो स्वर मुखरित हुए हैं वे कालिदास की काव्य कृतियों में प्रतिध्वनित होते हैं ईश्वर की इस अनुपम सृष्टि का सूक्ष्म एवं वैज्ञानिक पर्यवेक्षण कर उनके द्वारा किया गया प्रकृति का वर्णन संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि है। उनके प्रकृति वर्णन में जो सजीवता, भव्यता, रमणीयता एवं गतिशीलता दृष्टिगोचर होती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी व्यापक और सूक्ष्म दृष्टि वन, उपवन, पर्वत, सरिता, वृक्ष, पुष्प, लता, चन्द्र, सूर्य, तारा, आकाश, पशु-पक्षी प्रकृति के विविध अंगों में रमी है। महाकवि कालिदास ने भारतीय परम्परागत विविध ज्ञानशाखाओं का सदुपयोग करते हुए सम्पूर्ण परिवेश का भौगोलिक,

ISSN 2454-1230

नवदशोऽङ्कः, XIXth Issue

जनवरी - जून , 2024

January - June, 2024

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवास वरखेडी

संरक्षकः

प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

प्रबन्धसम्पादकौ

प्रो. अंजूसेठः

श्री अरूणकुमारमंगलः (अधिवक्ता)

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

प्रबन्ध सम्पादकीय

शुभकामनासन्देशः

शिक्षाप्रियदर्शिनी के गत अंक- 18 की समीक्षा

1. तिङर्थनिरूपणम् .... डॉ. सुधाकरमिश्रः 1
2. व्याकरणशास्त्रस्य संक्षिप्तेतिहासः .... डॉ. शिवदत्त आर्यः 7
3. शिक्षाक्षेत्रे ऐतिहासिकानुसन्धानोपागमः .... डॉ. आरती शर्मा 20
4. दार्शनिकानुसन्धानोपागमः .... डॉ. सुनीलकुमारशर्मा 26
5. दर्शनान्तरेषु पदार्थतत्त्वनिर्वचनम् .... डॉ. जगत् ज्योतिपात्रः 31
6. उपमास्वरूपविमर्शः .... डॉ. सौरभदुबे 37
7. मानवजीवने आत्मानुशासनाय संस्कृतस्य उपादेयता .... डॉ. प्रज्ञा 44
8. अप्पयदीक्षितस्य व्याकरणवैभवम् .... मनोजकुमारगुप्ता 48
9. महाभाष्यप्रदीपव्याख्यातृपरिचयः .... शङ्खशुभ्रगच्छितः 55
10. बृहत्संहितायां निरूपितो भूकम्पविचारः .... दिवाकरशर्मा 66
11. मनुस्मृतौ वर्णिताः दण्डस्य प्रकाराः .... ध्वनिका सूद 71
12. व्यक्तित्वपक्षेषु रुचेः महत्त्वम् उपयोगश्च .... ज्योतिनाथः 79
13. पूर्वकारिकोक्तरीत्या अग्निमुखविधिः एकम्– परिशीलनम् .... श्री विष्णुदास देशपाण्डे 85
14. सिद्धान्तज्यौतिषे अक्षक्षेत्राणां महत्त्वम् .... गिरीशभट्टः बि. 96
15. अधिगम व्यवहार सम्बद्ध उपकरण निर्माण एवं अध्ययन .... डॉ. नितिन कुमार जैन एवं दुर्गेश त्रिपाठी 105
16. विश्व में वैदिक ज्ञान 'योग' का नवप्रवर्तनीय उपयोग .... डॉ. विकास शर्मा 112
17. आधिदैविक एवं आधिभौतिक दुःखों के याज्ञिक उपचार .... ड़ॉ. वेणुधर दाश 122
18. महाभारत में पर्यावरण चेतना .... नकुल कुमार साहु 127
19. स्वास्थ रहने के लिए प्राणायाम की प्रासंगिकता (योगशास्त्र के अनुसार अभ्यास) .... दिवाकर शर्मा 132
20. भारतीय संस्कृति में यज्ञ का महत्त्व .... कणिका 140
21. भारतीय ज्ञान परम्परा का वैविध्य .... डा. वीणा मिश्रा 144
22. Efficacy of multiple intelligence-based instruction models for school teaching .... Prof. K. Ravishankar Menon, Dr Suneel Kumar Sharma & Sanjay Bhardwaj 151
23. Importance of Mitāhār in Yoga Philosophy .... Prof. Subash Ch. Dash & Sagar Mantry 158

शिक्षाप्रियदर्शिनी
(अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता
बहुभाषीयशोधपत्रिका)
नवदशोऽङ्कः, जनवरी-जून, 2024
ISSN: 2454-1230

व्याकरणशास्त्रस्य संक्षिप्तेतिहासः

डॉ. शिवदत्त आर्यः
सहायकाचार्यः, शिक्षापीठे
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली 16

सारांशः

भाष्यते व्यवहारादिषु प्रयुज्यते इति भाषा। 'भाषव्यक्तायां वाचि' इति धातोः निष्पन्नोऽयं शब्दः। अनया मानव स्वमनसि विद्यमानाः आलोचनाः भावना अनुभूतिश्चार्थयुक्तः ध्वनिभिः संकेतैः अर्थयुक्त लिखितसंकेतश्चाभिव्यक्ति करोति। सन्ति लोक बहवः भाषाः यासु संस्कृतभाषा इति प्राचीना समृद्धा चा भारतीयभाषाणामन्यतमं श्रेष्ठञ्च वर्तते संस्कृतम्। संदानीमस्माकं राष्ट्रस्य सांस्कृतिकीभारतीय भाषाणामन्यतमं श्रेष्ठञ्च वर्तते संस्कृतम्। सेदानीमस्माकं राष्ट्रस्य सांस्कृतिकी भाषा इतरासां 'भाषाणां जननी च मन्यते यथा चास्मिन् संस्कृतव्याकरणे परम्परा बहु प्राचीना वर्तते। संस्कृतभाषां शुद्धस्वरूपे ज्ञानार्थमवबोधनार्थञ्च व्याकरणशास्त्रस्याध्ययनं भवति। स्वस्य एतादृशि विशेषतायाः करणादेवायं वेदस्य सर्वप्रमुखमङ्गमिति मन्यते। यथा-

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते,
ज्योतिषामयनं चक्षुः निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्,
तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥

विश्वेऽस्मिन् विश्वे प्रथमं साहित्यं वेदः, वेदस्य संस्कृतभाषारचनामूलकत्वात् प्राचीनतमाभाषा संस्कृतभाषा सर्वास्वपि भूमण्डलभाषासु ऊरीक्रियते भाषाविदद्भिः वैज्ञानिकैः। अस्मिन् शोधपत्रे व्याकरणशास्त्रस्य प्राचीनता ऐतिह्यं च इत्यस्मिन् विषये एव वर्णितमस्ति।

मुख्यशब्दांशः: व्याकरणशास्त्रम्, संस्कृतम्, संस्कृतभाषा, वेदाङ्गानि, ऐतिह्यम्।

भूमिका

ज्ञानविज्ञानयोः समग्रशाखासु संस्कृतसाहित्यमधुनाऽपि शिखरायमाणं शोधार्थिनां कुतूहलशमनाय च गवेषणविषयीभूतं वरीवर्ति। अत एव- "संस्कृतं नाम दैवीवागन्वाख्याता महर्षिभिः' इत्यभियुक्तैः प्रतिपादितम्। दीव्यति आनन्देन क्रीडति इति देवाद् दैवीवाक्। क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु अर्थेषु प्रयुज्यमानदिव् धातु मूलकत्वाद् दैवीवागित्यस्यार्थो भवति सा वाक् यस्यां वाचि देवमनुष्याणां क्रीडाविजयव्यवहारप्रशंसाभिमाने च्छादिभावनामादि कालादभिव्यक्तिर्जायमाना

शिवदत्त आर्य:

ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450
OPEN ACCESS

Educreator Research Journal

SJIF Impact Factor 8.182
Peer Reviewed Referred Journal
DOI Indexing Journal

VOLUME–X, ISSUE– V
SEPT – OCT 2023

Editor
Dr. Amol Ubale

Educreator Research Journal
A Peer Reviewed Referred Journal
DOI Indexing Journal

Published by: *Aarhat Publication & Aarhat Journal's*
Mobile No: 8850069281

Educreator Research Journal (ERJ)

ISSN: P-2455-0515 E- 2394-8450
SJIF Impact Factor 8.182
Peer Reviewed Referred Journal
DOI Indexing Journal
Volume–X, Issue– V
Sept – Oct 2023

© Authors

Disclaimer:

The views expressed herein are those of the authors. The editors, publishers and printers do not guarantee the correctness of facts, and do not accept any liability concerning the matter published in the book. However, editors and publishers can be informed about any error or omission for the sake of improvement. All rights reserved.
All views expressed in the journal are those of the individual contributors. ***The individual author/s are responsible for any issues with the research paper.*** *The editor and Publisher are not responsible for the statements made or the opinions expressed by the authors.*
No part of the publication be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording and or otherwise without the publisher's and authors' prior written permission.

ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450

Educreator Research Journal

VOLUME–X, ISSUE– V

SEPT – OCT 2023

Original Research Article

12	*Conceptualization of Curriculum Mapping* ***Ms. Sangita Sanjay Shinde Prof. Dr. (Ms) Pratibha S. Patankar***	86
13	*Disaster Management: Climate Change and Seismic Retrofitting* ***Dr. Amrita Majumder***	96
14	*SEE Learning: Pilot study among Prospective Teachers and its Outcomes* ***Dr. Bhagwan Balani***	104
15	*Nutrition Education in Physical Education: Nourishing Bodies and Minds for Lifelong Health* ***Vijayakumar T. Bikkannavar***	109
16	अनुसंधान प्रतिवेदन लेखन में प्रचलित मान्यताएं **डॉ. शिवदत्त आर्य**	114

ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450

erj Educreator Research Journal

VOLUME–X, ISSUE– V

SEPT – OCT 2023

Original Research Article

अनुसंधान प्रतिवेदन लेखन में प्रचलित मान्यताएं

*डॉ. शिवदत्त आर्य,

* सहायक आचार्य, शिक्षापीठ, श्री ला.ब.शा.रा.सं.वि.वि. नई दिल्ली

सारांश:

अनुसंधान कार्य को लिखित संप्रेषण रूप में प्रस्तुतीकरण अथवा प्रकाशन की प्रक्रिया में कार्य की प्रवृत्ति अथवा प्रस्तुतीकरण के उद्देश्य के अनुकूल विभिन्न नामों जैसे-शोध प्रतिवेदन, शोध प्रबंध, शोध निबंध तथा अनुसंधान विवरण अथवा लेख आदि नामों से पुकारा जाता है। कोई भी अनुसंधान कार्य उस समय तक पूरा नहीं होता जब तक की उसका प्रतिवेदन ना हो जाए, सर्वोत्तम परिकल्पना, सुनियोजित अभिकल्प तथा महत्वपूर्ण निष्कर्ष उस समय तक व्यर्थ होते हैं जब तक की उन्हें दूसरों तक ना पहुंचाया जाए। यह कार्य प्रतिवेदन द्वारा होता है। अनुसंधान प्रतिवेदन का मूल उद्देश्य अन्य लोगों को यह बताना होता है कि अनुसंधानकर्त्ता द्वारा अमुख समस्या का समाधान किस प्रकार से किया गया है। जब अनुसंधानकर्त्ता अपनी संपूर्ण अनुसंधान प्रक्रिया को लिपिबद्ध करता है तो यह अनुसंधान प्रतिवेदन (Research Report) का रूप ले लेता है। एक अच्छे प्रतिवेदन में अन्य बातों के अलावा स्पष्टता (Clarity), यथार्थता (Accuracy) तथा संक्षिप्तता (Conciseness) तीन प्रमुख गुण होते हैं।

अनुसंधान प्रतिवेदन लिखना कोई सरल कार्य नहीं है इसमें पर्याप्त अनुभव तथा शोध प्रक्रिया के अन्तर्गत गहनता की आवश्यकता है। दरअसल, प्रतिवेदन लेखन एक कौशल है जो कि प्रत्येक अनुसंधानकर्ता के लिए आवश्यक है तथा यह सामान्य जनता तथा समाज में संप्रेषणीय भी होनी चाहिए। यह अनुसंधान प्रक्रिया, न्यादर्श तथा शोध तकनीकों का स्पष्ट चित्र प्रदान करने में उपयोगी है। अतः यह अनुसंधान को अन्तिम आकार तथा रूप प्रदान करने में में आवश्यक है। शोध प्रतिवेदन द्वारा सम्बन्धित क्षेत्र में कुछ नवीन समस्याओं के लिए भी सुझाव मिलते है जो कि अन्य व्यक्तियों को इन समस्याओं पर भावी अनुसंधान हेतु प्रोत्साहित करता है। इसी विषय पर इस लेख में विस्तार से चर्चा की गयी है/

Keywords: अनुसंधान, अनुसंधान प्रतिवेदन, अनुसंधान प्रक्रिया, लिखित संप्रेषण

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial Use Provided the Original Author and Source Are Credited.